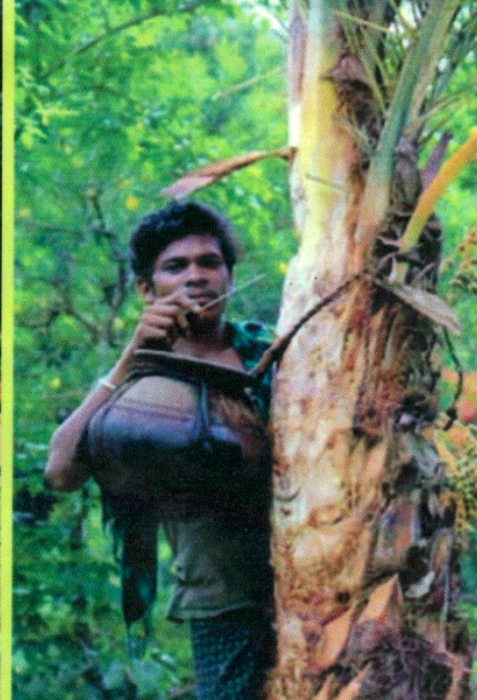
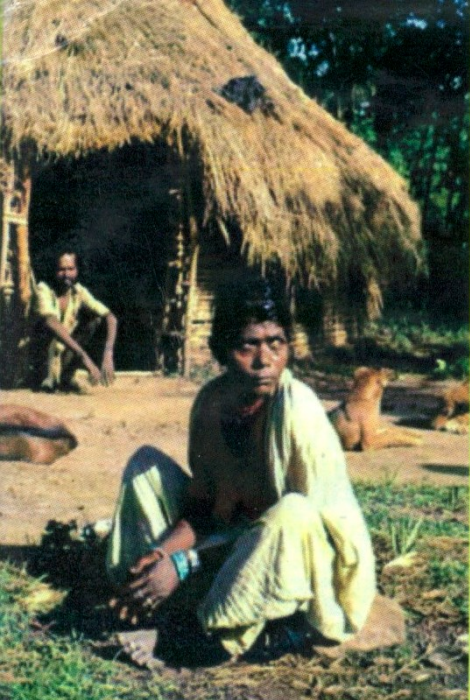




आदिवासी विमर्श इतिहास और संस्कृति

संघर्ष एवं नए जीवन के सपने

सं.डॉ.विनोद विश्वकर्मा



जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स

बी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053

मो. 08527460252, 011-22911223

ईमेल: jtspublications@gmail.com

© **सं.डॉ.विनोद विश्वकर्मा**

प्रथम संस्करण : 2016

ISBN 978-93-85833-24-3

मूल्य : 695 रुपये

वैधानिक चेतावनी :

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित आलेख विविध लेखकों के हैं, पुस्तक में आलेख शामिल करने के लिए संपादक से वैचारिक मेल आवश्यक नहीं है। सभी विचारों - अवधारणाओं के लिए आलेख लेखक ही जिम्मेदार हैं। किसी भी विवाद की स्थिति के लिए सम्पादक, प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा। पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन - फोटो कापी इलेक्ट्रानिक माध्यमों में उपयोग के लिए सम्पादक की लिखित अनुमति आवश्यक है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय सतना ही मान्य होगा।

आवरण सज्जा : राजीव कुमार शर्मा, दिल्ली - 53

शब्द-संयोजन : पंकज कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिन्टर्स, दिल्ली

अनुक्रम

भूमिका आदिवासी अस्मिता : संघर्ष एवं चुनौतियाँ	
डॉ. मुकेश कुमार मिरोठा	३
१. आदिवासी जीवन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अछूते प्रसंगों का जीवंत दस्तावेज है 'जंगल के गीत'	
अनुज लूगुन	१२
२.आदिवासी विमर्श : कहने को तो भारत मूल रूप से आदिवासियों का ही देश है.	
डॉ० विनोद विश्वकर्मा	१८
३.भारत का राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम और आदिवासियों की भूमिका	
डॉ. आनन्दसिंह पटेल	२८
४.आदिवासियों का स्वतंत्रता संघर्ष सामारिक महत्व	
डॉ० ऊषा मिश्र	३४
५.भारत का राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम और आदिवासियों का संघर्ष	
डॉ. आशुतोष कुमार द्विवेदी	४०
✓ ६.आदिवासी समाज का यथार्थ काफी अलग रहा है	
नंदी पटोदिया	४५
७. आदिवासी महिलाओं पर जुल्म की दास्तान	
डॉ. कमलेश सिंह नेगी	५३
८.आदिवासी स्त्री : साहसिक और प्यारपूर्ण जीवन संस्कृति	
डॉ. कुसुम माधुरी टोप्पो	६३
९.आदिवासी चिंतन : सपने, संघर्ष और चुनौतियाँ एवं वर्तमान समय	
मौ.रहीश अली खा	६६
१०.हाशिए पर आदिवासी समाज और संस्कृति	
रणजीत कुमार सिन्हा	६६
✓ ११.साहित्यिक विमर्श और आदिवासी प्रश्न	
डॉ. अरविन्द कुमार	७६
१२.आदिवासी विमर्श : अस्मिता के स्वर और भूमंडलीकरण	
अजीत कुमार पटेल	८१
१३.आदिवासी समाज : जीवन और संघर्ष	
संजीव कुमार विश्वकर्मा	८६

साहित्यिक विमर्श और आदिवासी प्रश्न

डॉ. अरविन्द कुमार

वर्तमान में साहित्य विमर्शों का दौर चल रहा है। २१ वीं सदी का इसे नया मोड़ कह सकते हैं, जिसमें आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श और स्त्री विमर्श उभरकर साहित्य की दुनियाँ में प्रवेश कर गया है और जिसमें साहित्य में नयी बहस को जन्म दिया। डॉ. एम. फीरोज अहमद के अनुसार “२१ वीं सदी विमर्शों की सदी है। जिसमें अनेक विमर्श हमारे सामने मौजूद हैं। जैसे दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श इत्यादि। २१ वीं सदी में जो लोग हाशिए पर थे, वे आज केन्द्र में आने लगे हैं। हाशिए से केन्द्र की ओर प्रस्थान की यात्रा आदिवासी विमर्श की अपनी अलग ही कहानी है। आदिवासी समूह को अब तक अलग हाशिए पर डाल दिया गया था। लेकिन अब दलित विमर्श और स्त्री विमर्श के समान आदिवासी विमर्श की गूँज सुनाई देने लगी है। जिसकी छटपटाहट ने हमें सोचने के लिए विवश कर दिया है कि आदिवासी विमर्श फिलहाल में अचानक सामने आया हुआ विमर्श है। या फिर इसका अपना अलग इतिहास है। जो अब तक हमारे सामने नहीं आ पाया था।”^१

आदिवासी समाज की मर्म कथा से प्रारंभ होता है। वनों, में ही इनके जीवन की इतिहास, परम्परा, रहन-सहन और संस्कृति का विकास होता है। डॉ. सुरेश उजाला के शब्दों में ‘वन आदिवासी समाज की धरोहर रही है। वनों की सुरक्षा से आदिवासियों की अर्थव्यवस्था को गति तथा संस्कृति को गरिमा मिलती है। वन सदैव आदिवासियों के पोशक रहे हैं, जिनसे उन्हें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभ मिलता रहा है। प्रत्यक्ष रूप में जैसे जलाने की लकड़ी, जनवरों को चारा, मकान बनाने के लिए लकड़ी की प्राप्ति, खाद, गोंद, शहद, कत्था, बाँस बेंत, जड़ी-बूटियाँ एवं जानवरों के सींग इत्यादि का लाभ प्राप्त होता है। अप्रत्यक्ष लाभ जलवायु पर नियन्त्रण, पर्यावरण संतुलन वर्षा में सहायता, रेगिस्तान के प्रसार पर रोक, बाढ़ नियन्त्रण में सहायता भूमि कटान पर रोक, पानी के स्तर में वृद्धि आँधी और तूफान आदि के रोक में सहायता प्राप्त होती है। आदिवासी समाज या जनजातीय